International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-10-2020; Accepted: 17-11-2020; Published: 25-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 35-37

सौन्दर्यबोध के निकष पर नागार्जुन की कविता

रंजना कुमारी
ग्राम+पो०– धर्मपुर बान्दे, थाना– शाहपुर, पटोरी, जिला– समस्तीपुर, बिहार, भारत।

सारांश
नागार्जुन की कविता और सौन्दर्य के मिनाज के स्तर पर सबसे अधिक निराला और कबीर के साथ जोड़कर देखा गया है। वैसे यदि व्यापक परिपेक्ष्य में देखा जाय तो नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि व्यक्तित्व कालीदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना संसार के गहर अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यवजहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित हैं। उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विज्ञय–वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का सरल साधन व माध्यम उनकी रचित कविता रही है।

मूल शब्द: नागार्जुन की कविता, सौन्दर्यबोध के निकष

प्रस्तावना
किसी भी युग–परिवेश और वातावरण के कैनवास पर साहित्य–रचना में जीवन की अभिव्यक्ति उसकी अशेष सौन्दर्य–सत्ता के साथ ज्ञान आवश्यक है। यह किसी भी रचनाकर के शैली–निर्धारण में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाता है। नागार्जुन न केवल हिन्दी के लब्ध–प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं, वरन्, मैथिली के भी युग–प्रवर्तक रचनाकार हैं। शोषित–समाज की पीड़ा और वर्ग–संघर्ष उनकी कृतियों में पूरे आवेग के साथ उभरकर सामने आए हैं, इसलिए उनके लिए रचना–कर्म जीवन–कर्म, का ही विस्तार बन गया है।
नागार्जुन की बहुसंख्य कविताएँ मध्यवर्गीय जिन्दगी की मुखबिरी करती हैं। महानगरी जीवन के त्रासद बिम्ब किसी भी कवि की रचना–प्रक्रिया और उसकी काव्य–भाषा के महत्त्वपूर्ण उपादान सिद्ध हो सकते हैं। नागार्जुन के रचना–संसार के उस त्रासद जीवन के चित्र अल्प है, किन्तु उस जीवन–शैली एवं मानसिकता से संबंधित कुछ व्यंग्यात्मक बिम्ब अवश्य बड़े मारक हैं। नागार्जुन ने तथाकथित भद्र–समाज के शिष्ट संभ्रान्त संस्कृति प्रेम के ढोंग एवं कृत्रिम रसिकाई पर करारा प्रहार किया है। डबल एम.ए. मिसेज गुप्ता, जिनके घर चाँदी के बापू, गजदंत के तथागत् चंदन के विठोवा, ताँबे के लेनिन सुसज्जित थे और साथ ही जिनके पास मार्क्स का पूरा सेट था, ये मिसेज गुप्ता कवि की कदन्न–दग्ध नियोग को आइसक्रीम खिलाकर अपनी कन्या की कॉपी पर कविता लिख देने का आग्रह करती है वह भी उनकी प्रसिद्ध कविता ही जिसमें 'पाँखें खजलाई कौए ने', 'रोता रहा चुल्हा', 'चक्की थी उदास' जैसा कुछ विम्ब है। इस पूरे चित्र को उपस्थित कर नागार्जुन जहाँ एक ओर चंद प्रगतिशीलों पर अपना निशान साधते हैं, तो दूसरी ओर सभ्य समाज की पूरी मनो–संस्कृति की बखिया उधेड़ कर रख देते हैं। स्वयं में अद्भुत संभावना समेटे हुए इस कविता का वस्तु एवं शिल्प अनिर्वचणीय है। एक और भद्र महिला पर अपनी प्रसिद्ध काले–काले भंवरे पर नौकरानी को डपटने की भंगिमा का चित्रण कर इस वर्ग पर करारा व्यंग्य किया है।

अर्धस्फुट कमल की पंखुड़ियों को/क्या हो गया था जाने
निकलते रहे बाहर/एक के बाद एक/काले–काले भौरे–/
देर तक हिलते ही रह गये हिलती रहीं देर तक।

अर्धस्फुट कमल की फीकी पंखुड़ियाँ [1]

हिलते होंठो को अस्फुट कमल और निकलने वाली गालियों को काले–काले भौंरों के रूप में देखना, नागार्जुन के वश की ही बात है। इन उपमानों के द्वारा वह इस वर्ग–चरित्र की कुत्सित मानसिकता की ओर चुपके–से इशारा कर जाते हैं। जयति नखरंजनी कविता भी इसी ढर्रे की कविताओं में एक बेमिसाल कड़ी है

सामने आकर/रूक गई चमचमाती कार
बाहर निकली वासकसज्जा युवतियाँ
चमक उठी गुलाबी धूप में तन की चमपई कांति
तिकोने नाखूनों वाली उँगलियाँ
सुर्ख नेलपालिश/कीमती रिस्टवाच
अंगूठियों के नग्/कानों के मणिपुष्प
किंचित कपचे हुए सघन नील–कुंतल
सब कुछ चमक उठा, महक उठा वायुमंडल [2]

ये सुसज्जित युवतियाँ रीतिकालीन नायिका नहीं है, वरन् समाज में बेहद सम्भ्रान्त मानी जानी वाली आधुनिकताएँ हं जो वोट देने हेतु सज–धज कर आयी है। नागार्जुन विलक्षण दृष्टि से संपृक्त जनवादी कवि है, तभी इतनी सावधानी से उन युवतियों के सूर्ख नाखूनों के पीछे कृत्रिम एवं छदम् जीवनानुभूति को आसानी से पहचान जाते हैं। रोशनी में नहाये जीवन के काले अंधेरे कोनों का संधान कर लेते हैं। जीवन की सहजता पर परत चढ़ाए कृ त्रिम रंगीनियाँ किस प्रकार लोगों को अपनी गहरी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों से लोगों को विमुख कर रही है, इसका सद्यः उदाहरण यह कविता है। वह मतदान करने हेतु सजधज कर आती है। कविता में आगे की घटना को चित्रित करते हुए नागार्जुन लिखते हैं–

ठमक गये सहसा बेचारियों के पैर [3]
यह इसलिए कि मतदान करने पर काला निशान उँगुलियों पर लग जाएगा।
हाय, इतने सुंदर हाथ हो जायेंगे दागी!
भड़क उठा परिमार्जित रूचि–बोध–

छिः कौन लगाये काला निशान।
क्षण–भर चिठकर/नई दिल्ली की तीनों परियाँ
मुड़ गई सहसा वापस। स्टार्ट हुई कार/लोग परियाँ
बात थी जरा–सी बस काले निशान की
तीन वोट रह गये फैशन के नाम पर [4]

सौन्दर्य एवं परिमार्जित अभिरूचि–समंजता के नाम पर अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी के प्रति इतनी उपेक्षा भाव प्रायः इस वर्ग में पायी जाती है और ऐसे लोगों के प्रति आम तबके का कैसा रवैया होता है, उसे भी बड़े मारक ढंग से कवि कह जाते हैं। बाद में हँसनेवाले लोगों की जमात में कवि भी शमिल है। यह जनकवि कितनी बारीक से नव–धनाढ्यों की तिमिरावृत अंतश्चेतना की पोल खोलता है, यह दर्शनीय है। इस कविता से प्रतीत होता है कि साहित्य में रीतिकाल का समापन भले 150 वर्ष हो गया है, लेकिन उसका समाज पर जो गहरा प्रभाव छद्म मध्यवर्गीयों के जीवन एवं चरित्र में गाहे–बगाहे प्रदर्शित होता रहता है।

श्याम तन भर बंधा यौवन/नत नयन प्रिय कर्म रत/मन गुरू हथौड़ा हाथ/कती बार–बार प्रहार/सामने अट्टालिका प्रकार में

जिस वर्ग की महिला की दैहिक सौन्दर्य की निराला जिक्र कर रहे हैं वो उसके कर्म–सौन्दर्य के कारण निखरा है। अट्टालिका के सामने अपने गुरू से पत्थरों पर प्रहार कर अट्टालिका को चुनौती उस महिला का कर्मरत सौन्दर्य इस भवनों में वास करने वाली यौवना सौन्दर्य से कई स्तरों में अलग और अनोखा है। इसे बहुत ही बारीकी से नागार्जुन पकड़ते हैं। इसी वर्ग से संबंधित एक प्राचार्य का चित्रण करते हैं, जो पुलिस लाठीचार्ज, अकाल, महामारी, बाढ़–सूखा जैसे मानविकी एवं प्राकृतिक आपदाओं से होनेवाली भारी जनहानि को 'नाश और निर्माण का चक्र' मानकर निरुद्वेग–निश्चित रहते हैं, किन्तु अपने लल्ला (पुत्र) के शिकागो न जा पाने की नौबत से रात–दिन गम में डूबे रहते हैं। पुलिस जुल्म की कहानी को वह किसी रोमांटिक नोवेल के बतौर सुनते हैं–

नत–नयन, मुद्रित मुख कुर्सीधर ने देखा/तो फिर क्या हुआ?
महीन मुस्कान फेंकते रहे मेरी ओर/वेतन सर्वस्व बुद्धिजीवी महानुभाव
प्रज्ञाकर गुणनिधान–बोले–यह सब तो चलता ही रहेगा/कहाँ तक रोयेंगे आप?
प्रलय नहीं होगा सृष्टि कैसे होगी,
क्यों भला बंद हो नाश और निर्माण के चक्र [5]

गुण निधान महोदय ने सहसा नगार्जुन को गोल्ड–फ्लैक सिगरेट पकड़ाया ताकि कहानी की रोमांच को ज्यादा दिलचस्प ढंग से गटका जा सके, किन्तु अपने पुत्र के शिकागो न जा पाने को मानव–जाति पर आसन्न एक गम्भीर संकट की भाँति रूपायित करते हैं–

डालर की किल्लत भी खूब रही लल्ला नहीं
जा सका शिकागो/हो गई पैसे जरद [6]

नागार्जुन का इस पर पूछना कि 'फिर क्या हुआ' पूरी कविता में एक कीलक के रूप में कार्य कर रही है। मध्यवर्गीय स्वार्थपरकता एवं छद्म संवेदनशीलता को उजागर करने के लिए नागार्जुन का यह व्यंग्य बड़ा कारगर सिद्ध हुआ है, क्योंकि इस प्रश्न के बाद गुणनिधान महोदय की जो प्रतिक्रिया वो पूरी कविता को एक नाटकीय मोड़ देकर पूरी मानसिक विडम्बना को प्रत्यक्ष कर देता है–

हो गई गरीब की कैरियर चौपट
और आप पूछते है/तो फिर क्या हुआ! तो फिर क्या हुआ!
आप भी साहब निरे साहित्यकार ठहरे!! [7]

अंतिम पंक्ति और भी मारक है। मध्यवर्गीय समाज में साहित्यकार की कितनी इज्जत और कैसी हैसियत होती है, उसप र नागार्जुन ने व्यंग्यात्मक ढंग से चोट किया है, जो कर्म पैसे न बरसाये, वह इस वर्ग के लिए ओछा और बैठे–ठाले का काम है, फिर चाहे उस कार्य को संपदित करने में कोई अपने जीवन, सर्वस्व निछावर कर दे। कुछ प्रश्न, छोड़ी नाटकीय संयोजन के बल पर पूरी मध्यवर्गीय चरित्र के तहेदार परतो को एक–एक नागार्जुन उघाड़ते हैं। यही उनकी खूबी है। अन्य कई कविताओं में भी नागार्जुन इसी मध्यवर्गीय मानसिकता का जायजा लेते हुए जन और भद्र के पार्थक्य को रेखांकित करते हैं। निमित्त जो उनकी उल्लेखनीय कविता है, वो है–'वे और तुम'–

वे हुलसित/अपने ही फसलों में डूब गये है
तुम हुलसित हो/चितकबरी चांदनियों में खोये हो
उनको दुख है/नये आम की मंजरियों को पाला मार गया है
तुमको दुख है/काव्य–संकलन दीमक चाट गये हैं। [8]

दो वर्ग और दो संस्कृतियाँ; दोनों के बीच के पार्थक्य को समझने–समझाने के लिए किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। एक मिथ्या संस्कृति जो पूँजीपतियों एवं भद्रलोक के जीवन से उत्पन्न है और केवल अमानुषिता, अहंकार एवं भोगवाद कर विज्ञापन करती है, दूसरी वर्ग–उल्लास का, जीवन–संघर्ष तथा मानवता के सार्थक मूल्यों के नये अध्यायों को जीवन से संलग्न करती है। उनकी सहजता और निरीहता बड़े मानवीय प्रश्न करती है थोड़े में ही खुश होने वाले इस वर्ग की वह भी समाज नहीं मयस्सर करा पा रहा है, इस पर प्रश्न है। यह कविता परस्पर विरोधी चेतना की कविता है, मध्यवर्गीय छद्म आवरण एवं सर्वहारा वर्ग के कठिन जीवन–संघर्ष की कविता है। नागार्जुन बस परिस्थिति का जायजा नहीं लेते, बल्कि उसमें परिवर्तन लाने के लिए उद्यम भी करते हैं। वो ईट का जबाब पत्थर से देना जानते हैं। वो समाज पनपने वाले छद्मवेशियों की बिल्कुल सटीक शिनाख्त करते हैं। इसी क्रम की एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कविता है 'धिन तो नहीं आती'। ट्राम में सवारियों की धकापेल में फंसे हुए एक नफीस–नाजुक, धुल से धुले लिबास में लिपटे भद्रजन को लक्षित कर नागार्जुन लिखते हैं–

छूती है निगाहों को/कत्थई दाँतों की मोटी मुस्कान
बेतरतीब मुंछों की थिरकन/सच–सच बताओ
धिन तो नहीं आती है?/जी तो नहीं कुढ़ता है? [9]

कितनी आत्मीयता से नागार्जुन पूछते हैं, लेकिन इस आत्मीयता में प्रच्छन्न प्रवाहित गहरे व्यंग्य की ओर पाठक का ध्यान सहज ही आकृष्ट हो जाता है। ठहाके, सूर्ती–भरे मुँहों से निकलती देशी–माटी की मोटी बातें और आहलाद में भरी कत्थई मुस्कान भद्र बंगाली चरित्र पर कितना भारी पड़ा है, उसका समीक्षाकरण नागार्जुन ने कराया है। यों तो घटना बेहद मामूली है, जिसे सब नोटिस भी नहीं कर सकते, लेकिन ये तो अपने नागार्जुन है जो देश–कोस की बातें करने वाले मजदूर की देहभाषा और उसके हँसी–ठहाकों को तथाकथित भद्रोजनित आचार–व्यवहार को पर वरीयता देते हैं। पसीने की गंध और कत्थई मोटी मुस्कान का सम्मान करनेवाले आमफहम भाषा के विशिष्ट कवि के मन में झंझावत पैदा करती ये कविताएँ प्राणवाण और अर्थगर्मित शब्दों की एक मुकम्मल और भरी पूरी दुनिया से पाठक का साक्षात्कार कारवाती हैं।

निष्कर्ष

अस्तु हम कह सकते हैं कि बाबा की कविताओं के ठेठ भारतीय और मौलिक धरातल की पहचान है, जो उन्हें अपने समकालीन दौर के प्रमुख कविताओं में अलग भाव–भूमि पर प्रतिष्ठित करती है। बाबा जमीन से जुड़े कवि हैं। अपने जनपद की धड़कनें उसका जीवन्त परिवेश अपनी माटी की सोन्धी गन्ध उनकी कविता में मौजूद है। लोक–जीवन जितना प्रामाणिक और विश्वसनीय यथार्थ नागार्जुन में मिलता है, वह उनके समकालीन अन्य कवियों में दुलर्भ है। उनके सामने समस्याएँ ही समस्याएँ हैं और जनता की जितनी समस्याएँ हैं– सब उनकी समस्याएँ है, छोटी–से छोटी घटना और बड़े से बड़े सामाजिक आदोलनों एवं राजनैतिक घटाटोपों पर अपने चिंतन को कविता में कहने की उनकी आदत है और इसलिए सारी समस्याएँ भी उनकी कविता का विषय बन जाती हैं। स्वभाव से दुर्वासा एवं हृदय से दुधिया वात्सल्य के संवाहक कवि नागार्जुन की कविताएँ एक नए सौन्दर्यशास्त्र की माँग करती हैं तथा पाठक से और उससे ज्यादा आलोचक से एक प्रकार के मुक्त और सीधे संबंध की अपेक्षा रखती है।

संदर्भ सूची

1. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 317.
2. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 304.
3. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 304–305.
4. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 304–305.
5. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 306.
6. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 306.
7. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 306–307.
8. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 362.
9. नागार्जुन रचनावली भाग–1: (संपादक शोभाकान्त), पृ. 351.